TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

दिसंबर 2024

अंक 4

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

यह किताब टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज, भागलपुर(टीम लीडर)

संकलनकर्ता

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर

सिवान

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,रघुनाथपुर

सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

इंसानियत की शान

इंसानियत की शान
इंसान की जान पर ही,
यह सारा चमन जहान है।
इंसानियत के शान पर ही ,
यह सकल जग महान है।
इंसान को इंसान समझो,
वह नहीं भगवान है।
इंसान का बने रहना इंसान ही,
सच में यह बड़ा इम्तिहान है।
जीवन मे कुछ बड़ा करने को
तुम यदि तैयार हो।
तुम हो यहाँ के बादशाह ,
तुम सच में बड़े होशियार हो।
अपने लिए जो न्याय नहीं,
दूसरों के लिए भी वह अन्याय है।
अपने लिए जो दुःख समझो,
दूसरों का भी दुःख समझना न्याय है।
है सच में यही इंसानियत,
इसी में बड़ा रसूख है।
यदि मानते हो सुख- दुःख तो,
इसमें बड़ा ही सुख है।
इंसान की हर मर्जी से,
सब होती नही हर चीज़ है।
कुछ तो प्रभु पर छोड़ दो,
जो सबका बड़ा अजीज है।

नाते रिश्तों का ख्याल भी,
इंसान ही रखते सदा।
कब धन लोभियों को देखा है,
रखते इंसानियत जिंदा कदा।
जीवन यदि कर्म पथ तो
इंसानियत उसका धर्म है।
जहाँ यह नही होता वहाँ ,
समझो अधर्म ही अधर्म है।
क्या दूसरों की सम्पत्ति पर
अधिकार जताना है सही।
क्या है यही इंसानियत,
जीवंत होता है कहीं।
इंसानियत के शान पर ही
लहराती धर्म की ध्वजा।
इससे इतर सर्वत्र दिखती,
दुष्कर्म की मिलती सजा।
इंसानियत की शान हमेशा,
सर्वत्र ही गूँजती रहे।
यह मानवता की तान है,
जो सर्वदा खिलती रहे।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

दोहावली

मन में सोच-विचार कर,
करिए नव संकल्प।
जीवन में सद्भावना,
कभी नहीं हो अल्प।
दान-पुण्य की भावना,
हो जीवन का मर्म।
कष्ट मिटाकर दीन का,
करिए सुंदर कर्म।।
भरें न बच्चों में कभी,
निंदित कलुषित बात।
नैतिक सौम्य विचार
की, भरें श्रेष्ठ सौगात।
जैसा चिंतन आपका,
वैसी सुंदर नीति।
श्रेष्ठ कर्म का बल मिले,
बढ़े प्रीति की रीति।।
बाल-विवाह विमुक्ति
का, चले सदा
अभियान।
उम्र अठारह वर्ष हों,
रखिए इसका ध्यान।।

बाल-विवाह कुरीति है,
फैलाएँ संदेश।
बच्चों की शिक्षा लिए, हो
सुंदर परिवेश।।
बाल-विवाह रिवाज का,
मिलकर करें निदान।
अलख जगाकर हम सभी,
रखें बचाएँ मान।।
खातिर नारी-शक्ति हित,
करिए ऐसा काम।
बाल-विवाह रिवाज़ पर,
लगे तुरंत लगाम।।
कानूनी अपराध है, बाल-
विवाह रिवाज़।
जन में भागीदार ला, करिए
खत्म समाज।।

देव कांत मिश्र

मध्य विद्यालय धवलपुरा
सुल्तानगंज, भागलपुर, बिहार

शिक्षा है संकल्प हमारा

शिक्षा है संकल्प हमारा,
ज्ञान का दीप जलाना है।
अज्ञान तिमिर को हराकर
नई राह दिखलाना है।
शब्दों का मधुर संगीत,
ज्ञान का अमूल्य आधार।
शिक्षा से उन्नति पथ पर,
हम करेंगे साकार।
हर घर में जले उजाला,
हर मन में हो नव विचार।
शिक्षा से सबको जोड़ें,
बने यही सशक्त आधार।
बच्चों का सपना हो पूरा,
युवाओं का हो विकास।
नारी शक्ति का हो उत्थान,
शिक्षा करे बढ़ने का प्रयास।

शिक्षा है संकल्प हमारा,
जीवन का सत्य सिखाना है।
सपनों को देना पंख सुनहरे,
नई ऊँचाई तक ले जाना है।
शिक्षा से होगा निर्माण,
एक सशक्त समाज बनेगा।
प्रेम, प्रगति और समानता से,
भारत फिर जग में आगे बढ़ेगा।
शिक्षा है संकल्प हमारा,
ज्ञान का दीप जलाना है।
अज्ञान तिमिर को शीघ्र मिटाकर,
नई राह दिखलाना है।

सुरेश कुमार गौरव
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

प्यारे-न्यारे चंदा मामा

चंदा मामा चंदा मामा,
लगते कितने प्यारे हो।
अनगिनत तारों के संग तू ,
लगते शीतल न्यारे हो।
तुममें जो शीतलता है ,
वह सबके मन को भाता है।
भव्य रौशनी तुममें जो,
जग को खूब सुहाता है।
तुमसे ही पोषित होते हैं ,
सारे वनस्पति इस जग के।
तुमसे ही शोभित होते हैं ,
सकल जीव इस मग के।
मेरे प्यारे नन्हें जीवन को ,
तुम खुशियों से तर जाते हो।
मेरे घर आँगन को भी,
सुभग रश्मि से भर जाते हो।

चंदा मामा बोल के ही
रिश्ता अटूट बन जाता है।
चंदा मामा नाम से ही,
तेरा अमिय रूप भा जाता है।
जब-जब पूर्णिमा होती है ,
कितना सुभग रूप में भाते हो।
जब-जब तुम नहीं रहते तो,
घोर अंधकार कर जाते हो।
हर तिथि में तेरा राज छुपा है,
हर तिथि चक्र परिवर्तन लाता है।
अमावस और पूर्णिमा भी,
तुम्हारे कारण ही बन पाता है।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

मानव जीवन के निहितार्थ

माटी का यह बना खिलौना,
एक दिन माटी में मिल जाएगा।
कोई नहीं होगा हम सबके संग,
केवल धर्म-अधर्म साथ जाएगा।
कुछ तो अच्छा कर ले प्यारे,
जो जीवन भर काम आएगा।
अंत समय में तेरा कोई नहीं,
तेरे साथ नहीं रह पाएगा।
चाहे कोई बड़ा या छोटा हो,
उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
जो समय है जाने का लिखा हुआ,
इसमें कोई पेंच नहीं अड़ता।
कर्म, अकर्म, विकर्म के बंधन ही,
ये तीनों कर्म के भेद कहलाते हैं।
हम अपने किसी कर्म को कर,
केवल दिल ही तो बहलाते हैं।
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जगत में,
यही चार, मानव जीवन के पुरुषार्थ हैं।
इस मर्म को हम सब अंगीकार करें,
सच में यही मानव जीवन के निहितार्थ हैं।

बुद्धि, विवेक हमारे ऐसे हों,
जिसका नित दिन हम सदुपयोग करें।
जगने से सोने तक के समय का
न कोई कभी दुरुपयोग करें।
यह समय अमूल्य है हर मानव का,
इसका युक्तिसंगत सब प्रयोग करें।
जीवन जीना है मानवता का,
कुछ परहित भी उपयोग करें।
कभी दूर न जायें अपनी माटी से,
हमें सबसे बड़ी यही अर्जी है।
जीवन को करें कभी निष्प्रभ नहीं,
यही विधाता की भी मर्जी है।
जीवन सफल उसी व्यक्ति का,
जो पर के काम आया करे।
पर दोष, निंदा, चुगली में,
समय कभी जाया न करे।
कोई तो आकर वैसा काम कर वंदे,
जो तेरा भव सागर पार कराएगा।
हर जीव मरणशील है प्यारे ,
पर तू नाम अमर कर जाएगा।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

छुआछूत

भारत के ये वीर सपूत,
जिसने मिटाया छुआछूत।
रामजी मालोजी सकपाल के थे सुपुत्र
भीमाबाई के थे चौदहवीं पुत्र।
गरीब परिवार में लिए अवतार,
व्यक्तियों में बन गए सबसे खास।
रोज पढ़ने जाते थे स्कूल,
शिक्षक बैठाते थे सभी बच्चों से दूर।
जब लगती थी इन्हें प्यास ,
कोई नहीं देता था इनको गिलास।
जाते थे कुँए के पास,
कोई ऊपर से गिराता पानी इनके
हाथ।
पानी पीकर लौटते थे निराश,
नहीं देता इनका कोई साथ।

जब पढ़ -लिखकर बन गए लाल,
मिटा दिए छुआछूत जात-पात।
दलितों के मिटाए श्राप ,
संविधान खुद से लिखे आप।
काम करते-करते थक गए आप ,
चीनी बीमारी धर लिया साथ।
आप थे समाज सुधारक और नेक
इंसान,
इसीलिए आपको बुला लिए
भगवान।
आज है आपकी पुण्य तिथि
हम करते हैं शत्- शत् बार प्रणाम,
जबतक सूरज चाँद रहेगा
अमर रहेगा आपका नाम।

नीतू रानी
म. वि. सुरीगाँव, पूर्णियाँ, बिहार

नन्हे बच्चे

नन्हे बच्चे मन के सच्चे
लगते हैं वे कितने अच्छे
है तोतली उनकी वाणी
सदा ही करते हैं मनमानी।
बातें करते हरदम कच्चे
नन्हे बच्चे मन के सच्चे
लगते हैं वे कितने अच्छे
आलस को हमेशा त्यागे।
दिन-भर खेल उधम मचाते
डाँट-डपट से नहीं घबराते
अपने धुन के बड़े ही पक्के
नन्हे बच्चे मन के सच्चे।
लगते हैं वे कितने अच्छे
हरदम हँसते कभी न लड़ते
आपस में मिलजुल कर रहते
हैं काम हमेशा अच्छे करते।
नटखट और निराले बच्चे
नन्हे बच्चे मन के सच्चे
लगते है वे कितने अच्छे।

प्रियंका कुमारी (पाण्डेय)

उ. म. वि बुढ़ी, कुचायकोट
गोपालगंज

कीर्ति के धनी राजेंद्र बाबू

सच में इस दुनिया में जिया वही ,
जिसे जाने के बाद भी लोग याद करते हैं।
वरना जीते जी लोग याद नहीं करते,
मरने के बाद तो केवल फरियाद ही करते हैं।।
सन अठारह सौ चौरासी के तीन दिसंबर को,
महादेव सहाय के घर एक बालक का जन्म हुआ।
होनहार बालक जीरादेई के लाल से,
आजन्म अद्वितीय कर्म हुआ।।
परीक्षार्थी, परीक्षक से तेज है,
है लिखी हुई केवल उनकी ही कॉपी में।
क्या यह कम है उनकी योग्यता जानने को,
जो रखी हुई है धरोहर झाँकी में।
यह पहली बार सामने आया,
जब जाँची पुस्तिका, परखी गई कई बार।
हर बार वह उचित ही ठहरा,
जो पहले परीक्षक ने लिखा पहली बार।
सभी परीक्षाओं में राजेंद्र बाबू ने
प्रथम स्थान ही प्राप्त किया।
उनकी मेधा को सभी ने लोहा माना,
जब ऐसी कीर्ति प्रशस्त किया।
कीर्ति के धनी राजेंद्र बाबू ,
विनयशीलता के खम्भ थे।
विद्वता में किसी से कम नहीं,
शालीनता में देश के स्तंभ थे।

कीर्ति के धनी राजेंद्र बाबू ,
विनयशीलता के खम्भ थे।
विद्वता में किसी से कम नहीं,
शालीनता में देश के स्तंभ थे।
किसी को गरिमा मिलती है,
किसी बड़े पद पर जाने पर।
पद की ही गरिमा बढ़ जाती थी,
राजेंद्र बाबू के उस पद पर आने पर।
ऐसे थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति,
जिन्होंने देश का मान बढ़ाया।
केवल एक बार नहीं दुबारा भी,
स्वतंत्र भारत का स्वाभिमान जगाया।
सादगी इनके रग- रग में थी,
वाणी इनका अमोघ अस्त्र था।
थे बड़े ही प्रत्युत्पन्नमति,
शालीनता इनका शस्त्र था।
इस देश में सपूतों की कमी नहीं,
पर राजेंद्र बाबू जैसे विरले ही मिलते हैं।
जिन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति है प्यारी,
वे आजन्म कमल की भाँति खिलते हैं।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

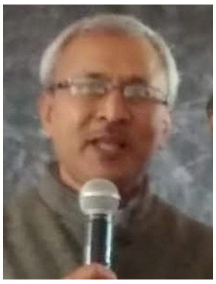

मनहरण घनाक्षरी

करते न मेहनत,
सदा पग-पग पर,
भोगें खामियाजा हैं।
दुनिया में कई लोग
कर्ज में हैं डूबे हुए,
जीने का तरीका देख,
लगे महाराज हैं।

संतति जो बुजुर्गों की,
करते हैं सेवा नहीं,
जनाजा निकालते हैं,
ले के बैंड बाजा हैं।
कुछ बीती बातों पर
देते हम ध्यान ज्यादा,
जान कर पूछते हैं,
जैसे लगे ताजा है।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म. वि. बख्तियारपुर, पटना

मनहरण घनाक्षरी

निपुण का भाव भर,
पहुँच प्रदान कर,
बुनियादी ज्ञान से ही,
बच्चों को जगाइए।
संख्या की समझ लाएँ,
प्रतिपुष्टि गुण पाएँ,
लेखन की सौम्यता भी,
सतत बढ़ाइए।

संक्रिया गणित नित्य,
लगे दिव्य-सा
आदित्य,
दैनिक प्रयोग कर,
सक्षम बनाइए।
शिक्षण प्रशिक्षण हों
उपयोगी बालमन,
आनंददायी भाव से,
उन्हें हरषाइए।

देव कांत मिश्र

मध्य विद्यालय धवलपुरा
सुल्तानगंज, भागलपुर, बिहार

नई राह गढ़ें भारत की

आओ बच्चों अब चलें स्कूल,
नहीं करें अब कोई भी भूल।
शिक्षा है सबके लिए जरूरी,
अशिक्षा है बिल्कुल गैर जरूरी।।
ज्ञान की रोशनी जब फैलती,
अंधकार की दुनिया है टलती।
आओ पढ़ें, लिखें और आगे बढ़ें,
नव भारत की एक नई राह गढ़ें।।
पढ़ाई से मिलती नई उड़ान,
हर सपना होगा अब आसान।
शिक्षक का मान करें सदा,
जीवन में पाओगे हर दुआ।।

आओ मिलकर ये प्रण करें,
हर कोना रौशन ज्ञान से भरें।
शिक्षा से बनेगी नई पहचान,
हम बनेंगे भारत की शान।।
आओ बच्चों अब चलें स्कूल,
नहीं करें अब कोई भी भूल।
शिक्षा है सबके लिए जरूरी,
अशिक्षा है बिल्कुल गैर
जरूरी।।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

समय पर खेल समय पर पढ़ाई

लिए खिलौने हाथ में,
खेलने को हम सब बेकरार।
पापा निकले घर से,
हम सब हुए फरार।
देख उनकी त्योरी,
रही न बुद्धि माथ।
असमय खेलने का यह प्रतिफल मिला,
हम सब पकड़े गए रंगे हाथ।
सोच -समझकर नित खेलें हम,
तनिक समय का भी करें विचार।
असमय ऐसी गलती कभी हुई,
तो अब बहुत पड़ेगी मार।
बालपन में खेल का,
है बहुत अधिक महत्त्व।
खेल भावना से हम जुड़ें,
आए जीवन में समत्व।
अभी जो अच्छी आदत पड़े,
वह जीवन भर सुहाय।
गलत आदत एक भी बन पड़े,
तो जीवन नरक बन जाय।
गलती कभी जब बन पड़े,
तब दिल में आए चोट।

गलत आदत एक भी बन पड़े,
तो जीवन नरक बन जाय।
गलती कभी जब बन पड़े,
तब दिल में आए चोट।
करनी सब अच्छा करें,
न कभी दिल में रहे कचोट।
हम अपने साथी संगी से,
रखें कभी न बैर।
आपस में सब हिलमिल रहें,
करें आनंद की सैर।
माता पिता की बात है,
अमृत से भी महान।
उनके चरणों में नित मिले ,
सारा सकल जहान।
खेल समय से हम करें ,
समय से पढ़ने को हम जाएँ।
जीवन में ऐसी खुशियाँ मिलें,
सब कुछ मनमाफिक पाएँ।
संगति ऐसी हो सदा,
जो हरदम आवे काम।
माता-पिता की इज्जत बढ़े,
जग में भी बढ़ जाए नाम।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

सर्दी

सर्दी का है मौसम आया
घना कोहरा भी है छाया।
सुबह-सुबह हीं हम जागें
जल्दी से स्कूल हम भागें।
ठंढे पानी से नहीं नहाना
कर जाते हैं कोई बहाना।
स्वेटर टोपी खूब है भाते
पहन जिसे हम इठलाते।
बैठें शांत तो लगती सर्दी
पढ़ना-लिखना है बेदर्दी।।

गर्म दूध और चाय भाता
पीकर जिसे सर्दी जाता।
बूढ़े थर-थर काँपते रहते
सहन नहीं होती है कहते।
दुबक रजाई में वो रहते
या आग जला तापते रहते।
पर हम बच्चे डरते नहीं
दुबक- दुबक रहते नहीं।
धमा चौकड़ी खेलें खेल
सर्दी गयी अब लेने तेल।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

मेरी गुड़िया रानी बोल

मेरी गुड़िया रानी बोल,
क्यों की है तुम चप्पल गोल।
चप्पल रोज पहनकर आती,
गोलाकार में उसे सजाती।
गोल चप्पल के अंदर खड़ी है,
लगती कोई छोटी परी है।
तुम हो छोटी तेरा मुँह है गोल,
मेरी गुड़िया रानी बोल।

मुँह पर लटके बाल हैं तेरे,
तुमको पसंद है दूध, रोटी, केले।
दिन में इतना हल्ला करती,
जैसे कहीं बज रहा हो ढोल।
मेरी गुड़िया रानी बोल,
क्यों की है तुम चप्पल गोल।

नीतू रानी
मध्य वि. सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला- पूर्णियाँ, बिहार

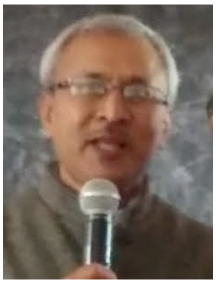

मनहरण घनाक्षरी

घटाएँ गरजती हैं,
बिजली चमकती हैं,
सारा जग दिखता है,
दूधिया प्रकाश में।
रात में अंधेरा होता,
बादलों का डेरा होता,
चकाचौंध कर देती,
दामिनी आकाश में।
कोई होता लाख सगा,
जब कभी देता दगा,
अपना पराया होता,
रहकर पास में।
बिना गुरु किसी को भी,
ज्ञान नहीं हुआ कभी,
पत्थर में भी देवता,
मिलते विश्वास में।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'

म. वि. बख्तियारपुर, पटना

बदलते गाँव की सूरत

भारत के गाँव अब सूने लगने लगे हैं ।
धड़ाधड़ दरवाजे पर ताले लटकने लगे हैं।।
बच्चों की मस्ती है शहर घूमने की,
बूढ़ों की आह निकलती गाँव छोड़ने की।
पढ़ने के नाम पर कुछ ज्यादती कड़ी है,
संबंधों में खटास अब तेजी से बढ़ी है।
खेत खलिहानों से नाता ज्यों छूटने लगे हैं,
उससे भी अब मोह भंग होने लगे हैं।
बूढ़े अपने शेष जीवन को देख रो रहे हैं,
वे वैसी मिलन न वैसा प्रेम देख रहे हैं।
पर जवानों के शौक बेइंतहा बढ़ रहे हैं,
उनकी पत्नियाँ भी शौक में शहर चाह रही हैं।
बच्चे को दूध घी से अधिक चाउमिन भा रही है।
माना कि शहर में है रोजगार की गारंटी,
पर देहात में भी क्या कम है सृजन की गारंटी।
करेंगे मेहनत तो खूब अन्न, फल मिलेंगे,
निठल्ले बैठे रहेंगे तो सब कुछ बिकेंगे।
शहरों में कट्ठे आध कट्ठे में घर बन रहे हैं,
देहातों में ऐसी जमीन तो बीघों पड़े हैं।
शहरों में कट्ठे आध कट्ठे में घर बन रहे हैं,
देहातों में ऐसी जमीन तो बीघों पड़े हैं।
शहरीकरण का दौर अब तेज हो चला है,
मातृभूमि के लिए यही बड़ी बला है।
देहातों का जीवन अभी भी कितना सस्ता,
अब भी हल निकालें यदि बचा कोई रास्ता।
नही तो गाँव की सूरत बदसूरत-सी होगी,
जहाँ खपड़े नदारद औ आसमाँ दिख रही होगी।
शहर, दिमागों की दुनिया, वहाँ इज्जत नहीं हैं,
किसी के लिए पल दो पल की फुर्सत नहीं है।
उत्सवों के समय शहर के लोग कभी पीछे न होंगे,
पर मरण के काम में कभी आगे न होंगे।
है कमाना खटाना तो जाएँ यहाँ से,
मगर यह सब हो जाए तो लौटें वहाँ से।
यहाँ संबंधों का इतिहास है सदियों पुराना,
वहाँ स्वार्थों का दिल है केवल झूठा बहाना।
बेशक घर कई बना लें कई इक शहर में,
पर घर से नाता न तोड़ें अपनी डगर में।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

सदाचार कुछ बचपन के

सदाचार कुछ बचपन के होते,
इसे अपनाकर हम अवगुण
खोते।
माता-पिता के कुछ सपने होते,
उसे पाने पर सब अपने होते।
सारी दुनिया जल, माटी से गोल,
दुनिया में हम बच्चे अनमोल।
बचपन में आनंद से बोलें,
देशभक्ति के शब्द भी घोलें।
मन में लिए तराजू तोल,
तब वाणी मुख से कुछ बोल।
कभी न वाणी कड़वी बोल,
देख इसका कितना है मोल।
सबकी दुआएँ सबके बोल,
हम अपने मन के अंदर तोल।
हम बच्चे हैं एक से मोल,
जहर ऊँच-नीच का कभी न
घोल।
माता-पिता का कहना मानें,
तब होंगे हम अधिक सयाने।

हम सब बच्चों की हो यही पहचान,
अनुशासन पर रहे नित ध्यान।
अनुशासन ही महान बनाता,
जीवन धन्य हमें कर जाता।
समय से भोजन समय से पढ़ाई,
लगते जीवन में अति सुखदाई।
बड़ों की इज्जत छोटों से प्यार,
यही चाहिए हम बच्चों के संस्कार।
जीवन में यदि करना है अच्छा,
तो कर्म करें सदा ही सच्चा।
जीवन में कुछ अच्छा कर जाएँ,
बड़ों की सीख सदा मन भाए।
ईर्ष्या द्वेष न कभी मन में लाना,
कठिन काम से कभी जी न चुराना।
किए उपकार को सदा रखें याद ,
नहीं मिलेगा कभी विषाद।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

दोहावली

शुभता मन में राखिए, लेकर
प्रभु का नाम।
मात-पिता के ही चरण, बसते
चारों धाम।।
शीश झुकाएँ ईश को, मन-
दुविधा से हीन।
धीरज से कारज करें, बदलें
जीवन दीन।।
माया की माया लगी, माया
पति दें ध्यान।
पाठक विनती यह करे, करिए
कृपा प्रदान।।
भटक रहा अज्ञान वश, ढूँढ
रहा मैं ज्ञान।
बोधिसत्व की कृपा से, बनते
सभी सुजान।।
लेते हरि का नाम जब, बन
जाता हर काम।
रोग शोक होता शमन, लेकर
देखो नाम।।

पाठक अंदर देखिए, बाहर-सा
आकाश।
फिर जीवन में पाइए, सुंदर
सत्य प्रकाश।।
कर तलाश पाठक रहा, मिले
कहीं ठहराव।
पर ऐसी लगती लगन, मिलता
है भटकाव।।
सही फैंसला ही किया, सदा
वक्त हालात।
मिटा सका है भ्रम नहीं, मन
बसे सवालात।।
मानव जो भ्रम जाल में, रचे
विविध आरोप।
दया-दान फिर माँगता, पाकर
समय प्रकोप।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

प्रेम वही करता इस जग में

प्रेम वही करता इस जग में,
जिसे मानवता से यारी है।
आचरण है पशुवत जिसका,
पृथ्वी पर जीना उसका भारी है।
सचमुच कहूँ तो प्रेम ही जीवन,
प्रेम ही अपनों की पहचान है।
प्रेम बिना है सब कुछ सूना,
हर मानव एक समान है।
प्रेम नहीं कभी बिकता जग में,
ढाई अक्षर का बड़ा प्यारा है।
इसमें बसते प्राण सभी के,
संसार में यह अति न्यारा है।
जीवन के पतझड़ के पलों में,
जब कोई प्रेमी बोता प्रेम है।
सकंठ हृदय जब द्रवित होता तो,
न रह जाता तब कोई नेम है।
आदि शक्ति की कृपा दृष्टि से,
प्रेम जीवन का आधार है।
मिलता है तब अपनों से सृजन,
यह हर दिल का प्राणाधार है।
प्रेम वही करता इस जग में,
जिसे मानवता से यारी है।
आचरण है पशुवत जिसका,
पृथ्वी पर जीना उसका भारी है।
समग्र प्रेम दिल का स्पंदन,
यह समग्रता का पाठ पढ़ाता है।
दिल ही नहीं दिमागों में भी,
नित जीवन का राग सुनाता है।
कटुता नहीं रह जाती दिल में,
जब प्रेम उमड़ कर आता है।
अपने परिजन की बात ही क्या,
तब पराये का दिल भी भाता है।
जिसके दिल में प्रेम उमड़ता,
वह प्रेम की ही भाषा बोलेगा।
कभी उसके साथ कुछ हुआ अगर भी,
वह प्रेम की ही परिभाषा घोलेगा।
जीवन है प्रेम के बल पर ही,
यह नाते रिश्तों की डोरी है।
सब कुछ हो पर प्रेम नहीं तो,
सब नाते रिश्ते ही कोरी है।
प्रेम वही करता इस जग में,
जिसे मानवता से यारी है।
आचरण है पशुवत जिसका,
पृथ्वी पर जीना उसका भारी है।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

कलम हमारी ताकत है

आओ बच्चों स्कूल चलें,
ज्ञान की राह बढ़ते चलें।
कलम उठाएँ, पुस्तक पढ़ें,
सपनों को साकार करें।
कलम हमारी ताकत है,
पुस्तक से गूँजे ज्ञान सदा।
इनसे सीखे जीवन जीना,
हर मुश्किल को समझना।
पढ़ाई से बनते हैं भविष्य के
सपने,
कलम से लिखे जाते कर्म
अपने।
पुस्तकें हैं ज्ञानरूपी साथी
सच्चे,
जो हमें बनाए हरदम अच्छे।

आओ बच्चों पढ़ते जाएँ,
हर अक्षर को गढ़ ज्ञान पाएँ।
कलम और पुस्तक के संग,
जो खुशियों से भर दें हर रंग।
ज्ञान से होगा जीवन रौशन,
पढ़ाई से हर संकट होगा भंग।
आओ बच्चों, वादा करें,
कलम-पुस्तक को सदा धरें।
आओ बच्चों स्कूल चलें
ज्ञान की राह बढ़ते चलें।
कलम उठाएँ पुस्तक पढ़ें,
सपनों को साकार करें।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

बालपन के अनमोल पल

पढ़ने को नहीं दिल है करता,
पर पढ़ना बहुत जरूरी है।
सब हैं मुझसे आस लगाए,
पर खेलना भी मजबूरी है।।
खेलकूद में मन जब लगता,
पढ़ने को तब जी नहीं करता।
पापा के डर से पढ़ने बैठता,
तब रोने का दिल खूब है करता।।
गीता, रामू मुझसे निकले आगे,
कक्षा में अच्छे अंक भी लाते हैं।
मैं ही पीछे रह जाता इसमें,
कई सर भी मुझे बतलाते हैं।।
छोटी बहन एक है मुझसे,
समय पर पढ़ने बैठ जाती है।
पढ़ते देख लज्जित होता मैं,
वह अच्छे अंक भी लाती है।।

सर से डाँट पड़ती है अधिक,
कभी पापा से मार भी खा लेता हूँ।
मम्मी डाँटती है मुझ पर,
तब अपना सब्र भी खो देता हूँ।।
समझ नहीं आता है अब भी,
कैसे मैं पढ़   पाऊँगा।
बालपन के अनमोल समय को,
कैसे यादगार बनाऊँगा।।
मुझे लगता है पढ़ना ही,
विकल्प एकमात्र बचा मेरा।
कोई न अब मनमानी चलेगी,
सकल दोष जब मुझ पर घेरा।।
अब लक्ष्य एक ही साध चला हूँ,
समय से रोज पढ़ने जाऊँगा।
सबक कितना भी हो कठिन,
खूब मन से पूरा मैं कर पाऊँगा।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

www.teachersofbihar.org

चाँद सलोना

लगता बड़ा सलोना चाँद
जैसे कोई खिलौना चाँद।
मन को मेरे भाता यह
पर बड़ा इठलाता यह।
दिखता नहीं हमेशा एक
जैसे इसके रूप अनेक।
दिन में है छिप जाता यह
रात निकल फिर आता यह।
तारों के संग मुस्काता है
शीतल रौशनी फैलाता है।
छोटा बड़ा होकर माने
लगता जैसे जादू जाने।
सब कहते हैं चंदा मामा
कोई देता उनसे उपमा।

जिसे निहारता है चकोर
लुका-छिपी मेघ से होड़।
हमको यह समझ न आए
माँ क्यों चाँद मुझे बुलाए।
शायद माँ का यही अरमान
मुझको जान सके जहान।
है माँ के सपनों को पर देना
बनकर मुझको चाँद
सलोना।
अब आसमान में उठना है
जग को रौशन करना है।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

मेरा भारत महान

मेरा भारत महान,तेरी जय हो
तेरी धरती पर,मैने जन्म लिया हो
तेरी नदियों का जल ,
मेरी प्यास बुझाता हैं
तेरे पहाड़ों की छाया
मेरे मन को शांति देती है ,
तेरे वीर सपूतों की बहादुरी
मुझे गर्व से भर देती है ।
तेरे किसानों की मेहनत ,
मुझे रोटी खिलाती है
मेरा भारत महान, तेरी जय हो

मुझे अपना देश है जानो से भी
प्यारा ,सोने की चिड़िया
कहलाती है वो है देश हमारा ।
तेरी संस्कृति की धनी,तेरी
भाषाओं की विविधता
तेरी एकता में अनेकता,मुझे
प्रेरणा देती है ।
हिम्मत वालों,साहस वालो सब है
भारत के वीर सपूत
अपने कर में लिए पताका आगे
ही आगे लहराएंगे..मेरा भारत
महान,तेरी जय हो..।

नीतू शाही
प्राथमिक विद्यालय प्रखंड कॉलोनी फूलवारी
शरीफ
पटना , बिहार

दोहावली

तन-मन-धन अर्पित करे, रखकर स्वच्छ विचार।
पाठक नित करते रहे, जन-जन का उपकार।।
वाणी ऐसी बोलिए, करें नहीं हलकान।
घाव हृदय को दे नहीं, बनकर एक कृपाण।।
दीप जले जब ज्ञान का, मिटता है अज्ञान।
मंजिल भी पाकर रहे, रोके नहीं थकान।।
सबको अनबन है यहाँ, करता खुद की शान।
ताल तलैया भी रखे, नदियों-सी पहचान।।
अड़चन बना विवाह में, माँगा गया दहेज।
मूल्य गिरा परिवार का, पूर्वज रखे सहेज।।
अड़चन तो हर ओर है, विरले करते जंग।
आमलोग बस कोसते, हरपल रहते तंग।।

अनबन-अड़चन बुद्धि को, करे सदा हलकान।
मूरख मद में बैठकर, पाए नहीं निदान।।
सर्दी पड़ती देखकर, कम्बल लिए खरीद।
मिले ओढ़ने को नहीं, बने पड़ोस मुरीद।
करती दवा इलाज भी, दुआ रहे जब साथ।
जब किसी का हाय लगे, सब रह जाए हाथ।।
माया-ममता-मोह को, दीजिए नहीं स्थान।
तीनों जीवन शत्रु है, करे सदा हलकान।।
तुलसी पूजन कीजिए, जो दे लाभ अनेक।
वात-पित्त कफ कर शमन, हरे दोष हर-एक।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

हम सब हैं भारत के बच्चे

लेकर हम सब प्रभु का नाम,
सदा करें ही अच्छे काम।
खेल-खेल में नहीं लड़ेंगे,
बात-बात में नहीं झगड़ेंगे।
हम सब हैं भारत के बच्चे,
कहते जो करते सब सच्चे।
जब हम पढ़ने को हैं बैठते,
सबक पूरा कर ही उठते।
नहीं कठिन पढ़ने का काम,
जीवन होगा तभी अभिराम।
खेल-कूद भी बहुत जरूरी,
स्वस्थ रहने पर हो अरमाँ पूरी।
हम खाली पेट ही दौड़ लगाते,
खाकर कुछ आराम फरमाते।

तन-मन जब तक स्वस्थ रहेगा,
तभी भविष्य का भार सहेगा।
सपने में कभी हम खो न जायें,
अपनी जिम्मेवारी बखूबी निभायें।
माता-पिता की आज्ञा सब मानें,
तभी सुपथ पर स्वयं को जानें।
हम बच्चे घर-घर के प्यारे,
माता-पिता के राज दुलारे।
जीवन में नित बढ़ना है काम,
तभी होंगे हम सब के नाम।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

पुस्तक

आओ बच्चों पुस्तक पढ़ लें।
नई-नई बातों को गढ़ लें।।
पुस्तक तो है ज्ञान-खजाना।
करें न कोई और बहाना।।
नये-नये कुछ शब्द मिलेंगे।
सुंदर मनहर चित्र दिखेंगे।।
कभी दिखें रवि-चाँद-सितारे।
कभी पेड़, पशु-पक्षी प्यारे।।

नित पढ़ने की आदत डालें।
कभी नहीं कुछ मन में पालें।।
इसको अपना मित्र बनाएँ।
सदा मित्रता भाव निभाएँ।।
अमिय ज्ञान का अलख जगाएँ।
अंतस सद्गुण भरते जाएँ।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
उमध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहारदा

आओ सीखें

आओ बच्चों पढ़ना सीखें
जीवन रंग बदलना सीखें।
अक्षर अक्षर गढ़ना सीखें
शब्दों के अर्थ समझना सीखें।
मिलजुल कर रहना सीखें
जीवन पथ पर बढ़ना सीखें।
दुश्मन से भी लड़ना सीखें
बुराई को कुचलना सीखें।
सपनों को संजोना सीखें
प्रेम हार पिरोना सीखें।
रिश्तों को निभाना सीखें
दूसरों का दर्द भगाना सीखें।

मंद-मंद मुस्काना सीखें
मधुर-मधुर बतियाना सीखें।
भय से बाहर आना सीखें
सबको गले लगाना सीखें।
मानवता अपनाना सीखें
दानवता मिटाना सीखें।
अपनों के संग जीना सीखें
प्रेम देश से करना सीखें।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

बीता वर्ष २०२४

जो बीत रहा है समय अभी,
वह लौटकर कभी न आएगा।
सदियों वर्ष यों ही बीत गए,
अब २०२४ भी बीत जाएगा।
समय नहीं कभी बैठा रहता,
यों ही पल-पल बीत जाता है।
जो पल अभी है बीत गया,
दुहराकर कभी न आता है।।
कितने खोते रहे हैं हर वर्ष,
देश दुनिया की हम रत्नें।
इस वर्ष भी खोए अनेक,
उन सबकी याद रहेगी यत्नें।।
पूर्व पी. एम. मनमोहन जी को खोया,
खोए और कई सितारे भी।
रत्नों में रतन टाटा को खोया हमने,
खो गईं शारदा गायिका बीच हमारे भी।
न रहे पूर्व आई. पी. एस. अधिकारी,
जो परम हनु भक्त अति प्यारे थे।
और न रहे गजलों के दिग्गज ही,
वो पंकज उधास सितारे थे।।
राम लला की भव्य मूर्ति विराजे,
यह जन -जन की वाणी थी।
भारत में सदियों से यह तो,
बड़ी अलख भरी कुर्बानी थी।

बीते पल की याद जब आती,
सजल नयन जल धार बहे।
खट्टे मीठे की याद सदा,
यह हर मन की बीती बात कहे।।
पल- पल बीत रहा वर्ष २०२४
और बीतेगा आनेवाला कल भी।
प्रकृति का यह चक्र निरंतर,
लायेंगे सुनहरे कल के पल भी।।
हम सब भी बीतेंगे एक दिन,
शेष रह जायेंगी यादें।
नए संदेशे नए प्रेम में,
कहीं भूल न जायें वादें।।
प्रकृति की यह महती जिम्मेवारी,
एक के जाने पर दूजा आए।
नये वर्ष के नवोन्मेष में,
सब घर खुशियों से भर जाए।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

खट्टी-मीठी यादें

बीत रहा यह साल है, देकर खट्टी-
मीठी यादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
कुछ लाएगी मुस्कान होंठ पर, कुछ
आँखों में मोती।
कुछ से त्यौरियाँ चढ़े भौंहों पर, कुछ
नेह भाव को बोती।।
कड़वी बातें होंगी भुलानी, बस याद
करें आह्लादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
कुछ जख्म देने को आए, कुछ मरहम
लगाने को।
कुछ को कोई फर्क परा न, गर चाहा
जख्म दिखाने को।।
अब ढोना नहीं मुनासिब, बेगैरत कुछ
वादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
कुछ अपनों की हुई पहचान, कुछ
अपने पहचाने गए।
समय किसी का सगा नहीं, गुजरा
जिसको पाने गए।।
कुछ जख्म है मिला अगर तो, भरने न
देंगे मवादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
कभी रौशन रहा रात भी, मानों दिन का
हो उजियारा।
कभी वक्त ऐसा भी आया, नजर दिन
को आए तारा।।
कुछ जीवन को दिशा दिए, हम भूलें न
उन उस्तादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
ऐसा अक्सर होता आया, शायद होता
भी जाएगा।
पर इतना तय है फिर से, गुजरा वक्त
लौट न आएगा।।
चलो चहक उठे आनंद से, कोसे क्यों
कुछ प्यादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।
जीवन को है गति देना तो, कुछ चीजों
को भूलना होगा।
जीवन का एक लक्ष्य मानकर, हमें
निरंतर चलना होगा।।
दृढ़ निश्चय कर अब पाठक को, रखना
है बुलंद इरादों को।
जीवन भर हम याद करेंगे, गुजरे कुछ
संवादों को।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

पद्यपंकज

टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से आप सबों को

नव वर्ष की शुभकामनाएँ

2025

आने वाला साल आपके लिए ढेर सारी ख़ुशियाँ लेकर आए

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े ।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010